द्वित्तीय प्रेस विज्ञप्ति दिनांक 01 अक्टूबर, 2015

1. **आज दिनांक 01 अक्टूबर, 2015 को एम0सी0आई0 द्वारा किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के सर्जिकल गैस्ट्रोइण्ट्रोलोजी विभाग में एकेडेमिक सत्र 2015-16 में एम0सी0एच0 पाठ्यक्रम संचालित किये जाने हेतु अनुमति प्रदान कर दी गयी है।** विदित हो कि एम0सी0आई0 द्वारा पूर्व में चिकित्सा विश्वविद्यालय के सर्जिकल गैस्ट्रोइण्ट्रोलोजी विभाग में चिकित्सा शिक्षकों की कमी दर्शाते हुए एम0सी0एस0 (सर्जिकल गैस्ट्रोइण्ट्रोलोजी) पाठ्यक्रम संचालित किये जाने की अनुमति प्रदान किये जाने में असमर्थता व्यक्त किया गया था। मा0 कुलपति जी के अथक प्रयास से प्राथमिकता के आधार पर सर्जिकल गैस्ट्रोइण्ट्रोलोजी विभाग में चयन समिति सम्पन्न कर चयन प्रक्रिया पूर्ण कर ली गयी। सर्जिकल गैस्ट्रोइण्ट्रोलोजी विभाग में चिकित्सा शिक्षकों के चयन हेतु दिनांक 11 सितम्बर 2015 को चयन समिति सम्पन्न हुई। चयन समिति के मुहरबंद परिणाम को विश्वविद्यालय कार्यपरिषद की बैठक दिनांक 15 सितम्बर, 2015 के समक्ष

विचारार्थ प्रस्तुत किया गया। विश्वविद्यालय कार्यपरिषद द्वारा चयन समिति की अनुशंसानुसार डा0 प्रदीप जोशी को सहायक आचार्य के पद पर नियुक्ति प्रदान किये जाने की संस्तुति प्रदान की गयी। जिसके अनुपालन में कुलसचिव के संदर्भ संख्या- 7776/बी0-15 दिनांक 15 सितम्बर, 2015 द्वारा डा0 प्रदीप जोशी को नियुक्ति पत्र निर्गत किया गया। नियुक्ति पत्र में इंगित शर्तो के अधीन सर्जिकल गैस्ट्रोइण्ट्रोलोजी विभाग में नवनियुक्त चिकित्सा शिक्षक डा0 प्रदीप जोशी ने अपना कार्यभार दिनांक 16 सितम्बर, 2015 को ग्रहण कर लिया है। जिसके फलस्वरूप सर्जिकल गैस्ट्रोइण्ट्रोलोजी विभाग में एम0सी0आई0 मानकानुसार चिकित्सा शिक्षकों की पूर्ति सम्बंधी समस्या का समाधान स्वतः हो गया था। तथा जिसकी रिपोर्ट एम0सी0आई0 को प्रेषित कर दी गयी थी। एम0सी0आई0 द्वारा आज अपनी बैठक में किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के सर्जिकल गैस्ट्रोइण्ट्रोलोजी विभाग में चिकित्सा शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित हो जाने के फलस्वरूप एम0सी0एच0

पाठ्यक्रम संचालित किये जाने हेतु अनुमति प्रदान कर दी गयी है।

2. **किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय द्वारा मा0 कुलपति जी के निर्देशन पर विश्वविद्यालय में उपचाररत मरीजों के हितों के दृष्टिगत Bar Coded patient stickers and wrist identification bands के प्रयोग का शुभारम्भ प्रथम चरण में ट्रामा सेण्टर में किया गया। इस प्रक्रिया के प्रारम्भ होने से मरीजों की पहचान सही रूप में की जा सकेगी तथा एक समान नाम इत्यादि वालें मरीजों की पहचान करना और भी आसान हो जायेगा। जिससे मरीजों में ब्लड ट्रांसफ्यूजन, सर्जरी इत्यादि प्रक्रिया में किसी प्रकार की मानवकृत गलती की सम्भावना शेष नहीं रह जायेगी।**